ISSN No-2231-5063 Vol.1,Issue.XII/June 2012pp.1-4

Research Paper

दामोदर पंडितकृत 'संगीत दर्पण' – एक विहंगावलोकन

डॉ.अर्चना माधव अं ोरे
सहयोगी प्राध्यापक
श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला
महाविद्यालय, अकोला

प्रस्तावना :–

ारतीय संगीत ग्रंथों को ारतीय मनीशियों ने अपनी अकाट्य प्रति ा, अनुपम मनीषा, अलौकिक पाण्डित्य एवं असाधारण विवेचन कौशल से वि ूषित कर अपने रचना–कौशल एवं प्रगल पांडित्य का परिचय दिया है।

मध्यकाल में मुस्लिम आक्रान्ताओं के आगमन से दो संस्कृतियों के मध्य ी अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों का निर्माण हुआ।

इ.स. 1625 में रचित, दामोदर पंडित कृत 'संगीत दर्पण' ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। दामोदर पंडितने तत्कालीन विद्वानों के सांगीतिक मंतव्यों का अध्ययन किया परन्तू उन्होंने संगीत की व्याख्या न करके अपने समय के संगीत को वर्णित करने का प्रयत्न किया है।

संगीत दर्पण अवश्य ही श्रेष्ठ ग्रंथ है। प्रस्तुत शोध निबंध में 'संगीत दर्पण' का विहंगावलोकन किया गया है।

दामोदर पंडित ने रतकालीन संगीत तथा तत्कालीन विद्वानों के सांगीतिक मंतव्यों का गहन अध्ययन किया परंतु उन्होंने संगीत की परि ाषा नही की। 'संगीत दर्पण' का रचना काल 1625 माना गया है।

संगीत कार्यालय हाथरस व्दारा इसका मूल और हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हुआ, जिसमें दो अध्याय 1) स्वराध्याय और 2) रागाध्याय है।

पं. जगदीश नारायण पाठक रचित 'संगीत शास्त्र प्रवीण' इस ग्रंथ में छः अध्यायों का वर्णन किया गया है। स्वराध्याय, रागाध्याय, प्रबंधाध्याय, वाद्याध्याय, तालाध्याय, नृत्याध्याय।1 का वर्णन किया गया है।

'संगीत दर्पण' नामक ग्रंथ के अध्याय 1) स्वराध्याय 2) रागाध्याय। स्वराध्याय का आधार – 'संगीत रत्नाकर स्पष्ट रुप से ज्ञात होता है। परंतू रागाध्याय की रचना का कोई और आधार ग्रन्थ है।

दामोदर पंडितने इस ग्रंथारं ब्रम्हा एवं महादेव की वंदना करके संक्षेप में संगीत शास्त का सार कथन करता हूँ, ऐसा किया है।

ग्रंथ उद्देश :

रतादिमतं सर्व मालाड्याति प्रयत्नत।
श्रीमद्दामोदराख्येन सज्जनानंद हेतुना
प्रचरद्रूप संगीतसारोध्दारो विधीयते ।।2।।

(दामोदर पंडित, संगीत दर्पण द्वितीय श्लोक, पृ. 11)

सज्जनों के आनन्द के लिये मै दामोदर पंडित, अपने पूर्ववर्ती रत इ. संगीत के प्रकाण्ड विद्वानों के मत का प्रयत्नपूर्वक मंथन करके प्रचलित संगीत का संक्षिप्त वर्णन करता हूँ। इसी प्रकार से दामोदर पंडित अपना ग्रंथोद्देश स्पष्ट करते है।

प्रार म में ही दामोदर पण्डित ने संगीत की परि ाषा इस प्रकार स्पष्ट की है।

गीतं वाद्यं नर्तनश्च त्रयं संगीतमुच्यते।
मार्गदेशी वि ागेन संगीतं द्विविधं मतम् ।।3।।

दामोदर पंडित द्वारा की गई यह परि ाषा आज ी ज्यों कि त्यों मानी जाती है। परन्तू मार्गी और देशी यह `द केवल ऐतिहासिक महत्व की वस्तू बन गये है।

तद्उपरांत रागोत्पादक कारण – नाद, नाद की उत्पत्ति, स्थान, श्रुति, सात शुध्द बारह विकृत, वादी–संवादी इ. का विवेचन किया है। कुल, जाती, वर्ण, द्वीप, ऋषि देवता, छन्द विनियोग, स्वरों की श्रुतिजाती, ग्राम मूर्च्छना, शुध्द तथा कूट तान संख्या, प्रस्तार, नष्टोंद्दिष्ट–प्रबोधक, खण्डमेरु, स्वरसाधारण, जातिसाधारण काकली तथा अन्तर स्वरों का प्रयोग, वर्ण– लक्षण, 63 अलंकार, 13 जाति लक्षण, ग्रह–अंश आदि का वर्णन है। शारीर विचार के अंतर्गत महत्वपूर्ण उल्लेख है। नादोत्पत्ति प्रकार के अंतर्गत नाद के पाँच प्रकारों का ना में अति सूक्ष्म, हृदय में सूक्ष्म, कंठ में पुष्ट शिरो ाग में अपुश्ट तथा मुख में कृत्रिम रुप से आधार मानते है।

दामोदर के पंडित के समय में 7 शुध्द एवं 12 विकृत अर्थात कुल 19 स्वरोंपर संगीत आश्रित था।

शारीरं, नादसं ूतिः स्थानानि, श्रुतयस्तथा।
ततः शुध्दाः स्वराः सप्तविकृता द्वादशाप्यमी ।।7।।
वाद्यादि `दाश्चत्वारो रागोत्पादन हे तव ।।8।।

नाद की महत्ता वर्णन

पशुः शिशुर्मृगो वा पि नादेन परितुष्यति।
अतो नादस्य माहात्म्यं व्याख्यातुं केन शक्यते ।।31।।

पशु, बालक और मृग स ी नाद से संतोष प्राप्त करते है, अतः ऐसे नाद की महत्ता का वर्णन हनुमान ही कर सकते है –

नादाब्धेस्तु परं पारं न जानाति सरस्वती।
अद्यापि मज्जन यात्तुंबं वहति वक्षसि ।।32।।[7]

नादरुपी समुद्र के ओर – छोर का सरस्वती को ी पता नहीं है। अतः डूब जाने के य से वह अ ी तक अपनी छाती पर दो तुम्बिकाओं को धारण किये हुये है।

श्रुतिस्वरुप वर्णन

स्वरुपमात्रश्रवणान्नादोऽनुरणनं विना।
श्रुतिरित्युच्यते `दास्तस्या द्वाविंशतिर्मताः ।।51।।

प्रथमाघातसे अनुरणन हुये बिना जो ऱ्हस्व नाद उत्पन्न होता है, उसे श्रुति समझना चाहिये। श्रुति `द 22 है। 22 श्रुतियों के नाम दामोदर पंडित ने दिये है।

स्वर लक्षण

श्रुत्यनंतर ावित्वं यस्यानुरणनात्मकः।
स्निग्धश्च रंजकश्वासौ स्वर इत्य धीयते ।।57।।[8]
स्वयं यो राजते नाद स स्वर परिकीर्तित।।58।।[8]

जो नाद श्रुति उत्पन्न होने के पश्चात तुरन्त निकलता है तथा जो प्रतिध्वनि–रुप प्राप्त करके मधुर, तथा रंजन करने वाला होता है उसे स्वर कहते है।
जो स्वयं मधुर है उसे स्वर समझना चाहिये।
दामोदर पंडित ने नाद की परि ाषा इसप्रकार की है।

नकारं प्राणनामानं दकारमनलं विदुः।
जात प्राणाग्नि संयोगात्तेन नादोऽ धीयते ।।39।।[7]

संक्षेप में, ब्रम्हग्रंथिलक्षण, वायु, श्रुति, बाईस श्रुतियाँ, स्वर लक्षण – सात शुध्द तथा 12 विकृत स्वर वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी स्वरों का उल्लेख है।8
जिन स्वरों के योग से राग उत्पन्न होता है, वह वादी है।

''रागोत्पादन शक्तेर्वदनं तद्योगतो वादी ।।68।।[9]

ग्राम स्वरों का समुदाय है और ग्राम का आधार मूर्च्छनाएँ है।

ग्रामः स्वरसमूहः भ्यात्मूर्च्छनादेः समाश्रयः।
तौ द्वौ धरातले तत्र स्यात् षड्जग्राम आदिमः ।।75।।[10]

उपरोक्त श्लोक में (प्रचलित संगीत में) दो ग्राम है। उनमें से पहला षड्ज ग्राम है। गान्धार ग्राम इस पृथ्वी पर नहीं। जब गांधार स्वर 'रि' तथा 'म' इन दोनों स्वरों की एक–एक श्रुति लेता है उसी तरह जब पंचम की एक श्रुति ध लेता है, तथा 'निषाद' स्वर 'ध' की और षड्ज की एक–एक श्रुति लेता है, तब ऐसी स्वर रचना को रत मुनीने 'गांधार–ग्राम' की संज्ञा दी है। यह ग्राम देव लोक में है। इस पृथ्वी पर वह नहीं है।

गांधार ग्राममाचष्ट तदा तं नारदो मुनिः।
प्रवर्तते स्वर्गलोके ग्रामोऽसौ महीतले ।।80।।[10]

सातो स्वरों के कुल, रंग, ऋषि – देवता, जन्म ूमि, छन्द तथा रसों का ी वर्णन है।

स्वरों के रंग –
पद्मा : पिंजरः स्वर्णवर्ण कुन्द प्र ोऽसितः
पीतः कर्बुर इत्येषः। जन्म ूमिमथो ब्रुवे ।।86।।[11]

स्वरों की जन्म ूमि –
जंबु –शाक कुश–क्रौंच – शाल्मली – श्वेत नामसु।
द्वीपेषु पुष्करे चैते जाताः षड्जादयः क्रमात ।।87।।[12]

ऋषि
वन्हिर्वेद्या शशांकश्च लक्ष्मीकांतधश्य नारदः।
ऋष ो दहशु पंच षड्जदीस्तुम्बरुर्धनी ।।88।।[13]

देवता
वन्हिब्रम्हसरस्वत्यः शर्वश्रीगणेश्वराः।
सहस्रांशुरिति प्रोक्ताः क्रमात् शड्जा दि देवता ।।89।। [14]

छंद
क्रमादनुष्टुप् गायत्री त्रिष्टुप् च बृहती तत।
पंक्तिरुष्णिक च जगतीत्या हुश्चछंदांसि सादिषु।।90।।[15]

रस
सरी वीरेऽद् ुते रौद्रे धो बी त्से यानके।
कार्यो गनी तु करुणे हास्य श्रृंगारयोर्मपी ।।91।।[16]

दामोदर पंडितने मूर्च्छना संबंधी विवेचन किया है। कूटतानों के संबंध में ी दर्पणकार ने लिखा है। खण्डमेरु और तानोंका विस्तृत विवेचन किया है। तानों के प्रकारों को निकालने की रीति ी वर्णित है। स्वर साधारण और जाति साधारण के प्रकार के अतिरिक्त वर्ण, वर्ण के प्रकार, लक्षण, जाति–लक्षण, श्रुतियोंसे ही सप्तस्वर, तथा इन सप्तस्वरों के सप्त उच्चारण कर्त्ताओं यथा मयूर, चानक, ककरा, क्रौंच, कोकिल, मेंढक और हाथी का वर्णन किया गया है। और स्वराध्याय यही समाप्त होता है। द्वितीय अध्याय में दामोदर पंडितने रागाध्याय लिया है। इस अध्याय में राग की परि ाषा बताकर 'राग' की 'रंजकता' को आवश्यक बताया है और 'रागांग' राग अर्थात ऐसा राग जिसमें ग्राम राग की छाया हो, ाषा राग की जिसमें छाया हो उसे ाषांग राग बताया गया है। थके हुये इंद्रियों को उत्साह प्रदान करनेवाला 'क्रियांग' और

जिसमें राग की छाया बहुत ही थोडी हो उसे 'उपांग' कहा गया है। जिसमें तारस्थान में अत्यन्त द्रुत ताने ली जाती है, जिसमें तरह–तरह की 'गमकों' का प्रयोग होता है, एवं अत्यन्त कौशलसे काम करना पडता है, उसे कांडारणा कहा गया है।

योऽयं ध्वनि विशेषस्तु स्वरवर्ण वि ूषित।
रंजको जनचित्तानांस राग कथितो बुधैः ।।1।।[17]
ाषाच्छायाश्रिता येन ाषांगं तेन हेतुना ।।2।।
किंचिच्छायानुकारित्वादुपांगमिति कथ्यते।।3।।
कांडारणा तु कथिता तारस्थानेषु शीघ्रता।
गमकैर्विविधैयुक्ता कौशलेन वि ूषिता ।।4।।

तपश्चात् रागों के तीन `द – शुध्द, छायालग, संकीर्ण, रागों के तीन वर्ण – औडव, पाडव और संपूर्ण, बीस रागों को (1 श्री, 2 नट्ट, 3 बंगाल, 4 द्वितीय बंगाल, 5 ाष, 6 मध्यम षाडव, 7 रक्तहंस, 8 कोल्हास, 9 प्र व, 10 ैरव, 11 ध्वनि, 12 मेघ, 13 सोमराग, 14 कामोद, 15 द्वितीय कामोद, 16 कन्दर्प, 17 आम्रपंचम, 18 देशाख्य, 19 कैशिक कुकु , 20 नट्टनारायण) दामोदर पंडितने इन नामों को 'संगीत रत्नाकर' से उद्धृत किया है। इस ग्रंथ में दशविध राग कहे गये है जैसे – ग्राम राग, उपराग, राग इ. इनमें कहे रागों में से दर्पण कारने 20 राग अपने ग्रंथ में व्यर्थ ही नकल कर दिये है। परन्तु इस विषय का अधिक स्पष्टीकरण नहीं किया है। ग्राम – राग और उपरागों को छोडकर 'राग' ही क्यों लिये इसका कारण विदित नही।

राग की उत्पत्ती, राग–रागिनियों के गायन समय, ऋतू, स्वरुप एवं स्वरों पर ी रोशनी डाली है। छः पुरुष राग एवं उनकी रागिनियों को ी बताया है। इस विषय में सर विल्यम जोन्स कहते है18–

Each branch of knowledge in this country has been embellished by poetical fables : and the inventive talents of Greeks never suggested a more charming allegory than the lovely families of six Ragas, named, in order of seasons above exhibited, Bhairava, Malawa, Shri, Hindola, or Vasanta, Deepak and Megh, each of whom is a Genius, or Demi God, wedded to five Raginiess or Nymphs, and father of eight little Genii, called his putras or sons; the fancy of Shakespeare and the pencil of Albano might have been finely employed in giving speech and form to his assemblage of new aerial beings, who people the fairy land of Indian Imagination, nor have the Hindoo poets and painters lost the advantage, with which so beautiful a subject presented them.

राग रागिनीयों का ध्यान योग्य रुप से करनेपर वें प्रसन्न होकर गायक को यश प्रदान करतें है, यही धारणा उन पंडितों की थी।[19] हमारे संगीत की उत्पत्ति का सम्बन्ध देवताओं के साथ जोडा गया है। दामोदर पंडितने द्वितीय अध्याय में पार्वती द्वारा शिवजी की पृच्छा ('राग' याने, 'रागिणी' क्या है, उनके समय, ऋतू, उनको स्वरुप) उद्धृत की है।

रागावर्णव – मत से राग – रागिनियाँ निम्न श्लोक में दी है।

ैरव पंचमो नाटो मल्लारो गौडमालवः
देशाख्यश्चेति षड्रागाः प्रोच्यन्ते लोक विश्रुतः।।38।।[20]

ग्रन्थ में हनुमन्मत के छ रागों और उनकी रागिनियों के लक्षण एवं ध्यान ी वर्णित है। उदा. `रव

धैवतांश ग्रहन्यासो रिपहीनत्वमागतः।
ैरव स तु विज्ञेयो धैवतादिकमूर्च्छनः।
विकृतो धैवतो यत्र औडवः परिकीर्तितः।।46।।[21]

ध्यान –
गंगाधर शशिकला तिलकस्त्रिनेत्रः
सर्पैर्वि ूषिततनुर्गजकृत्तिवासाः।
ास्वत्रिशूलकर एष नृमुण्डधारी
शु ाम्बरे जयति ैरव आदि रागः ।।47।।[22]

ैरव की रागिनी ैरवी –
सम्पूर्ण ैरवी ज्ञेया ग्रंहांशन्यास मध्यमा।
सौविरी मूर्च्छना ज्ञेया मध्यमग्रामचारिणी।
कैश्चिदेषा ैरववत्स्वेर्ज्ञेया विचक्षणै।।48।।[23]

ध्यान –
स्फटिक रचित पीठे रम्य कैलास श्रृंगे
विकचकमलपत्रैरर्चयन्ती महेशम्।
कर धृतघृनवाद्या पीतवर्णायताक्षी
सुकवि ियमुक्ता ैरवी ैरवस्त्री।। [24]

उपसंहार

'संगीत दर्पण' यह ग्रन्थ पं. दामोदर का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के आरं मेंही संगीत मूलाधार. नादतत्त्व की व्याख्या की गई है। नाद से वर्ण, वर्ण से पद तथा पद से वाक्य उत्पन्न होता है। वाक्य से ही सारा जगत का सारा व्यवहार होता है। अर्थात यह संपूर्ण संसार नाद के ही अधीन है।

स्वराध्याय में नाद, श्रुति–स्वर ग्राम, मूर्च्छना तथा बत्तीस तानों का वर्णन है। तानों में खंडमेरु के प्रकार का वर्णन तथा कूट तानों को निर्मित करने का वर्णन है। इसके अतिरिक्त इस अध्याय में स्वर साधारण, वर्ण, अलंकार आदि का वर्णन है। इस में श्रुति स्वर वि ाजन तथा श्रुतियों पर स्वरोंकी स्थापना में प्राचीन आचार्यों के सिध्दान्तों को अपनाया है।

रागाध्याय में 20 रागों के नाम रागध्यानों का वर्णन, रागांग, ाषांग, क्रियांग और उपांग का संक्षेप में वर्णन किया है। राग–रागिनियों का वर्णन शिवमतानुसार है। हनुमत के अनुसार ी राग रागिनियों के नामों का उल्लेख ी इस ग्रन्थ में किया गया है।

रागोंका गायन समय और ऋतूओं का संक्षिप्त वर्णन ी इस ग्रन्थ में किया गया है। इस प्रकार इस ग्रंथ में राग, श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्छना, तान, तानों के प्रकार वर्ण, रागांग, ाषांग, क्रियांग, उपांग, शुध्द, छायालग, संकीर्ण, गायन समय इ. वर्णन है। अन्य संगीत ग्रंथों के ाँति विद्वानों ने इसे संगीत का महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना है। इसके उपरांत शिवमत, हनुमन्मत एवं रागार्णव के मत के राग – रागिनियों के अतिरिक्त और रागों के ध्यान का वर्णन किया है। कल्याण, नाट, देवगिरी, सौरठी, त्रिवणा पहाडी पंचम। शंकरा रण, बडहंस, वि ास, रेवा, कुडाई, आ ीरी इन रागों का अतिसंक्षिप्त परिचय दिया है।

दर्पणकार ने जो राग कहे है, वे मूर्च्छना के आधार से कहे है। यह बडी प्राचीन पध्दती है। मूर्च्छना कह चूकने के बाद उन रागों के स्वरों को कहने की आवश्यकता ही नहीं।

जिसमें श्रुति, जाती, स्वर, ग्राम इ. नियमित नही हैं तथा जिसमें ि◌न्न–ि◌न्न देशों की छाया का समावेश होता है, ऐसे रागों को (जैसे कि मालश्री, जयतश्री, धनाश्री मारु इ.) को देशी राग माना है।

इसी प्रकार से लक्ष्मीधर पण्डित के पुत्र पंडित दामोदर का लिखा संगीत–दर्पण का दुसरा अध्याय समाप्त होता है।

निष्कर्ष

1.संगीत दर्पण, के दो अध्याय है। पहिला अध्याय स्वराध्याय एवं द्वितीया ध्याय रागाध्याय है।
2.स्वराध्याय का आधार 'संगीत रत्नाकर' स्पष्ट रुपसे ज्ञात होता है परंतू रागाध्याय की रचना का कोई और आधार ग्रन्थ है।
3.ग्राम और मूर्च्छनां का प्रयोग रागवर्णन में करने से 'दर्पण' में जो राग बताये है वे अलग लगते है।
4.सं. दर्पण में छह राग और उनकी तीस रागिनीयाँ मानी है। ग्रंथकर्ता ने यहाँ हनुमन्मत का दाखिला दिया है, लेकिन हनुमन्मत के ग्रंथ का उल्लेख नहीं किया है। उसमें शुध्द–विकृत स्वर, मूर्च्छना आदि का ी खुलासा 'दर्पण कार' ने किया नही।
5.ग्रंथ में वर्णित रागवर्णन ि◌न्न प्रकार से दी है।
6.दर्पण में रागाध्याय में मूर्च्छना का विचार किया गया नही है।
7.गीत, वाद्य तथा नृत्य इन तीनों कलाओं का समुदाय वाचक नाम संगीत है। उस के दो प्रकार है मार्गी तथा देशी।
8.ताल तथा राग का अंत किसी ने नहीं पाया है।

फुट नोट

1.पाठक, पं.जगदीश नारायण, संगीत शास्त्र प्रवीण, पृ. 92
2.दामोदर पंडित, संगीत दर्पण अध्याय 1, श्लोक 7,8, पृ. 7.
3.तत्रैव, अध्याय 1 श्लोक 31,32, पृ. 12,13
4.पंडित दामोदर, संगीत दर्पण, अध्याय 1 श्लोक 51, पृ.क्र. 17
5.वही, पृ. 18
6.वही. पृ. 18
7.दामोदर पंडित, संगीत दर्पण, अध्याय 1 श्लोक – 39, पृ. 14
8.12 विकृत स्वर
1.षड्ज साधारण, प्रसंगे विकृत – च्युत षड्ज
2.निषादकाकली प्रसंगे विकृत – 'अच्युत षड्ज'
3.षड्ज साधारण प्रसंगे विकृत – ऋष
4.मध्यम साधारण प्रसंगे विकृत – गांधार
5.अंतर प्रसंगे विकृत – अच्युत 'मध्यम'
6.मध्यम साधारण प्रसंगे विकृत – 'च्युत' मध्यम
7.अंतर गांधार प्रसंगे विकृत – अच्युत मध्यम
8.मध्यम ग्राम विकृत – पंचम
9.मध्यम साधारण प्रसंगे विकृत – 'पंचम'
10.मध्यम ग्राम विकृत – 'धैवत'
11.षड्ज साधारण प्रसंगे विकृत – 'निषाद'
12.काकली निषाद प्रसंगे विकृत – 'निषाद'
डॉ. काव्या, लावण्य कीर्ति सिंह, संगीत–सुधा, पृ. 64.
9.दामोदर पंडित, संगीत दर्पण, अध्याय 1 श्लोक 68, पृ. 26
10.वही, पृ. 30
11.वही. पृ. 31
12.वही. पृ. 31
13.वही. पृ. 32
14.वही. पृ. 32
15.वही. पृ. 32
16.वही. पृ. 32
17.दामोदर पंडित, संगीत दर्पण, द्वितीयोध्याय पृ. क्र. 71
18.Pt. Bhatkhande V.N. (1992 II Edition), Hindusthani Sangit Paddhati - Part - I, Pg. 108 - 109, Popular Prokashan,
19.वही. पृ. 108
20.दामोदर पंडित (1950) सं. दर्पण श्लोक 38 पृ. 78 संगीत प्रेस, हाथरस.
21.दामोदर पंडित, संगीत दर्पण, द्वितीय अध्याय श्लोक 46 पृ. 81
22.वही, पृ. 81
23.वही, पृ. 85
24.वही, पृ. 85

संद र्भ ग्रंथ सूचि :

1.पंडित दामोदर, 'संगीत दर्पण' (हिन्दी ाषा टीका सहित) प्रकाशक – संगीत कार्यालय हाथरस
2.देसाई, चैतन्य (1979), संगीत विषयक संस्कृत ग्रंथ, महाराष्ट्र विद्यापीठ ग्रंथ निर्मिती मंडळ, नागपूर – 12
3. ातखंडे, पं. विष्णु नारायण, (1982) हिंदुस्थानी संगीत पध्दती, प्रथम ाग, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई – 34
4.मालबीय, डॉ. श्रध्दा (2010), ारतीय संगीतज्ञ एवं संगीत ग्रंथ, कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली – 110002.
5.काव्या, डॉ. लावण्य कीर्ति सिंह (2009), संगीत सुधा, कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली – 110002.